Dated 14|8|2020

B.A Part-2 (H) Philosophy

डॉ० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

Explain the objects of Moral Judgement?

Ans. नैतिकशास्त्र का विषय ऐच्छिक क्रिया है। अतः नैतिक निर्णय हम ऐच्छिक क्रियाओं पर देते हैं। प्रत्येक ऐच्छिक क्रिया के दो रूप होते हैं - (क) आन्तरिक और (ख) बाह्य।

बेन्थम और मिल का मत - अब प्रश्न है कि जब हम नैतिक निर्णय देते हैं तो किस पहलू को ध्यान में रखकर आन्तरिक अथवा बाह्य। इस बात को लेकर मतभेद है। मिल बेन्थम आदि उपयोगितावादी विचारक के अनुसार, नैतिक निर्णय क्रिया के बाह्य रूप के आधार पर देना चाहिए। उनके अनुसार नैतिक निर्णय परिणाम के आधार पर दिया जाता है। यदि किसी कार्य का परिणाम अच्छा हो तो वह आचरण नैतिक दृष्टिकोण से अच्छा समझा जाएगा और यदि किसी कार्य का परिणाम बुरा हो तो वह बुरा आचरण समझा जाएगा।

इसके विपरीत काण्ट और बटलर आदि विचारकों के अनुसार, नैतिक क्रिया के आन्तरिक उद्देश्य के आधार पर दिया जाता है न कि परिणाम पर। इनके अनुसार नैतिक निर्णय में परिणाम पर विचार नहीं किया जाता और यदि कार्य का आन्तरिक उद्देश्य ठीक है तो वह कार्य अच्छा माना जाता है, भले ही उसका परिणाम अच्छा न हुआ हो। अतः यदि आन्तरिक उद्देश्य बुरा हो तो वह कार्य बुरा समझा जाएगा, भले ही उसका परिणाम अच्छा हुआ हो।

उपर्युक्त कथन से इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नैतिक निर्णय व्यक्ति के प्रयोजन के आधार पर दिया जाता है। मैकेन्जी के शब्दों में "Moral judgement is not properly passed upon a thing done but upon a person doing."

—X—